साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2556, श्रावण पूर्णिमा, 2 अगस्त, 2012 वर्ष 42 अंक 2

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

सुखो बुद्धानमुप्पादो, सुखा सद्धम्मदेसना।
सुखा सङ्घस्स सामग्गी, समग्गानं तपो सुखो॥
धम्मपद १९४, बुद्धवग्गो.

सुखदायी है बुद्धों का उत्पन्न होना, सुखदायी है सद्धर्म का उपदेश। सुखदायी है संघ की एकता, सुखदायी है एक साथ तपना।

शुद्ध धर्म की शिक्षा

भगवान बुद्ध ने अपने साठ धर्मपुत्रों को धर्म में पका कर विभिन्न दिशाओं में भेजा। उन्होंने सम्यक संबुद्ध की पावन शिक्षा को लोगों तक पहुँचाने के लिए प्रथम धर्मदूतों का काम किया।

जैसे भगवान ने सिखाया वही धर्म उन्होंने लोगों को सिखाया। भगवान ने कभी अपनी शिक्षा को बौद्धधर्म नहीं कहा। यदि ऐसा होता तो संप्रदाय बन जाता। भगवान ने उसे धर्म कहा और अनुयायियों को धार्मिक कहा। ये ६० धर्मदूत लोगों को धर्म सिखाने के काम में लग गये। यदि वे बौद्धधर्म सिखाते तो लोग इससे दूर भागते, क्योंकि इसे पराया धर्म समझते। धर्म वस्तुतः सब का होता है। सार्वजनीन, सार्वदेशिक, सार्वकालिक होता है। धर्म कुदरत के कानून को कहते हैं। विश्व के विधान या प्रकृति के नियमों को धर्म कहते हैं जो सब पर लागू होते हैं। किसी का पक्षपात नहीं करते। जैसे अग्नि का धर्म है जलना और जलाना। जो उसके संपर्क में आयेगा उसे जला देगी। सूरज का धर्म है प्रकाश और गर्मी देना। चंद्रमा का धर्म है प्रकाश और शीतलता देना। जो सब के लिए समान रूप से है।

इसलिए मुझे लगता है कि इस कार्य में उन्हें बहुत कठिनाई नहीं हुई होगी। इसका एक कारण यह भी रहा होगा कि वे धर्म का मात्र उपदेश देने नहीं निकले थे, बल्कि उसका अभ्यास करवाते और जीवन में उतरवाते थे। केवल उपदेश होता तो ऐसे बहुत से मत-मतांतर थे जो धर्म का उपदेश देते थे, परंतु उसे धारण करना नहीं सिखा पाते थे। जबकि संबुद्ध के धर्मदूतों ने उसका व्यावहारिक पक्ष उजागर किया, जिससे कि लोगों को धर्म धारण करके तत्काल लाभ मिल सके।

धर्म के तीन प्रमुख अंग--

१. शील--

धर्म की पहली शिक्षा थी शील, यानी, सदाचार। उस समय के जो भी मत-मतावलंबी थे वे लगभग सभी शील की महत्ता को स्वीकार करते थे।

मैं अपने अनुभव से जानता हूं क्योंकि कट्टर हिंदू सनातनी घर में जन्मा, पला। बड़ों ने मुझे ईश्वरभक्ति का पाठ पढ़ाया। पाठशाला के गुरुदेव ने भी जो ईश-वंदना सिखायी उसमें अपने ईष्टदेव ईश्वर से यही प्रार्थना करनी सिखायी गयी-- *... लीजिये हमको शरण में, हम सदाचारी बनें।*

हमारी पाठशाला के आचार्य ने हमें समझाया कि शरीर और वाणी से कोई ऐसा कार्य नहीं करें जिससे अन्य प्राणियों की हानि होती हो, उन्हें कष्ट होता हो। ऐसा करना दुराचार है और इससे बचना ही सदाचार है। सभी परंपराओं में बचपन से ही सदाचार का पाठ पढ़ाया जाता है इसलिए मैं अनुमान कर सकता हूं कि जब भगवान के धर्मदूत उनकी शिक्षा का प्रचार करने निकले तब पहला कदम शील का ही होने के कारण कोई विरोध नहीं हुआ होगा। इन धर्मदूतों ने लोगों को सिखाया होगा कि सदाचार और दुराचार दोनों पहले मन में जागते हैं। फिर वाणी अथवा शरीर के कर्म के रूप में प्रकट होते हैं। किसी भी समझदार व्यक्ति को यह सच्चाई भी स्वीकार कर लेने में कोई कठिनाई नहीं हुई होगी। सदाचार का जीवन जीने के लिए शरीर और वाणी से तो दुराचार करने से बचना ही है, परंतु मन को भी दुराचरण से मुक्त करना अत्यंत आवश्यक है और अत्यंत कठिन भी।

उन दिनों के किसी भी साधारण व्यक्ति को यह समझने में कठिनाई नहीं हुई होगी कि -- ***मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया।*** यानी सारे कर्मों के आरंभ में मन जागता है। आगे का सारा प्रपंच मन के आधार पर ही चलता है। इसीलिए मन ही श्रेष्ठ है, प्रमुख है। अतः सारा प्रपंच मनोमय ही है। अपने आपको सुधारने के लिए मन को सुधारना आवश्यक है। मैले चित्त से किया गया वाणी या शरीर का कर्म दुष्कर्म ही होता है, जो कि अपने लिए भी हानिकारक होता है, औरों के लिए भी। इसी प्रकार निर्मल चित्त से किया गया कर्म सत्कर्म ही होता है, जो अपने लिए सुखदायक होता है, औरों के लिए भी। यदि मन दूषित हुआ तो शरीर और वाणी के कर्म दूषित ही होंगे और उनका परिणाम दुःखदायी ही होगा। इसी प्रकार यदि मन निर्मल होगा तो शरीर और वाणी के कर्म अपने आप स्वस्थ होंगे और उनका परिणाम भी सुखद ही आयगा। जैसे कि कहा गया--

मनसा चे पदुट्ठेन, भासति वा करोति वा।
ततो नं दुक्खमन्वेति, चक्कंव वहतो पदं॥

-- जब कोई व्यक्ति प्रदुष्ट मन से वाणी या शरीर का कोई भी काम करे तो परिणाम भी दुःखद ही होगा और दुःख उसके पीछे ऐसे ही लग जायगा जैसे कि बैलगाडी के चक्के बैल के

पैरों के पीछे-पीछे लग जाते हैं।

इसी प्रकार--

मनसा चे पसन्नेन, भासति वा करोति वा।
ततो नं सुखमन्वेति, छायाव अनपायिनी॥

-- जब कोई व्यक्ति मन को उजला रख कर वाणी या शरीर का कोई कर्म करता है तब सुख उसके पीछे ऐसे ही लग जाता है जैसे कि कभी साथ न छोड़ने वाली हमारी छाया।

जब संबुद्ध के इन दूतों ने मन को वश में करके सदाचारी बनना सिखाया तब वाणी और शरीर के कर्म स्वतः दुराचरण से मुक्त होकर सदाचरण की ओर उन्मुख हो गये।

२. समाधि --

शरीर और वाणी के कर्मों को सुधारने के लिए मन को वश में करना आवश्यक है। मन वश में हो तो ही दुराचरण से बच सकते हैं तथा सदाचरण की ओर उन्मुख हो सकते हैं। इसके लिए समाधि का अभ्यास कराया।

उन दिनों के अधिकांश भारतवासी मन को वश में करने की सच्चाई को महत्त्व देते थे और इसके लिए अनेक उपाय करते थे, जिनमें से कुछ एक आज भी कायम हैं। जैसे कि--

-- सब के अपने-अपने उपास्यदेव। लोग उसे प्रसन्न करने के लिए बार-बार उसके नाम का जाप करते हैं ताकि वह प्रसन्न होकर मन को एकाग्र कर दे। परंतु यह आलंबन सार्वजनीन नहीं, सांप्रदायिक है।

बुद्धपुत्रों ने उनकी इन मान्यताओं का खंडन करके विवाद तो नहीं ही खड़ा किया होगा। लेकिन धीरे-धीरे लोगों के मन में यह सच्चाई बैठायी गयी होगी कि 'अपनी मुक्ति अपने हाथ'। किसी अन्य के सहारे अपने चित्त को एकाग्र करने और निर्मल बनाने के स्थान पर एक नई बात सामने आयी होगी कि --

अत्ता हि अत्तनो नाथो, को हि नाथो परो सिया। यानी कि व्यक्ति स्वयं अपना मालिक है, दूसरा कौन मालिक होगा भला? अपनी सुगति या दुर्गति स्वयं अपने हाथ में है-- ***अत्ता हि अत्तनो गति***। अतः अपनी गति सुधारने के लिए स्वयं ही प्रयत्न करना होगा।

अपने मन को वश में करने के लिए उन्होंने सार्वजनीन उपाय बताया। आते-जाते हुए सहज स्वाभाविक सांस की जानकारी करते रहो। मन जैसे ही भटके, उसे फिर सांस की जानकारी पर ले आओ। सांस के साथ कोई शब्द नहीं जुड़े, कोई काल्पनिक मान्यता नहीं जुड़े। जो सांस नैसर्गिक रूप से आ रहा है, जा रहा है, बस उसे वैसे ही जानो।

कुछ लोगों ने स्वावलंबन की इस विद्या को स्वीकार किया होगा, परंतु अनेकों ने पूर्वकाल से चले आ रहे परावलंबन को ही महत्त्व दिया होगा। जिन्होंने प्रचलित परावलंबन के स्थान पर स्वावलंबन का सहारा लिया होगा, वे प्रज्ञा की ओर मुड़ गये होंगे।

३. प्रज्ञा--

सहज, स्वाभाविक सांस के आधार पर सम्यक समाधि पुष्ट होने लगती है तब नाशिका के द्वारों के आसपास कोई-न-कोई संवेदना मिलने लगती है। फिर वह सारे शरीर में फैल जाती है। इससे सच्चाई की जो जानकारी होती है वह किसी अन्य की देन नहीं है, बल्कि स्वयं अपने पुरुषार्थ की देन है। इसलिए यह परोक्ष ज्ञान नहीं, प्रत्यक्ष ज्ञान है। इसीलिए प्रज्ञा कहलाता है।

काम करते-करते प्रज्ञा के भी तीन अंग खूब समझ में आने लगे होंगे--

१. **श्रुतमयी प्रज्ञा** यानी वह ज्ञान जो किसी से सुन लिया और श्रद्धापूर्वक स्वीकार कर लिया।

२. अगला कदम-- उस पर चिंतन-मनन करके उसे बुद्धि के स्तर पर स्वीकार किया। वह **चिंतनमयी** प्रज्ञा कहलायी। ये दोनों ही सही प्रज्ञा नहीं हैं।

३. सही प्रज्ञा है **भावनामयी** प्रज्ञा। वह ज्ञान जो स्वयं अपनी अनुभूति पर जागे। यानी किसी से सुन कर या अध्ययन द्वारा स्वीकार कर लेना, अथवा उससे आगे बढ़ कर चिंतन-मनन द्वारा उसकी सच्चाई को तर्क की कसौटी पर कस कर स्वीकार कर लेना, सही प्रज्ञा नहीं है। सही ज्ञान वह जो स्वयं अपनी अनुभूति पर जागे। वह परोक्ष ज्ञान नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अपना ज्ञान है। अतः यही सही माने में प्रज्ञा है।

इस प्रकार ध्यान करते-करते लोगों ने देखा होगा कि उनके मन में बहुत सुधार आने लगा है। कोई व्यक्ति दुराचारी था, वह सदाचारी हो गया, सच्चरित्र हो गया। जो मद्यप था उसका नशा-पता छूट गया। जुआरी का जुआ छूट गया। व्यभिचारी का व्यभिचार छूट गया। इस प्रकार लोगों को विद्या का लाभ मिलने लगा। अनेक लोग दुराचार से मुक्त होकर सदाचार में लगने लगे। लोगों को बुद्धपुत्रों की यह शिक्षा तत्काल फलदायिनी लगी। परंतु इसका फल प्राप्त करने के लिए परिश्रम तो स्वयं ही करना पड़ता है। कोई मार्ग भले बता दे, पर चलना स्वयं होता है। अन्य किसी का सहारा नहीं, भरोसा नहीं।

फिर भी कुछ लोग पुरातन परंपरा में बँधे होने के कारण इस ओर नहीं झुके होंगे। परंतु जब औरों को लाभान्वित हुआ देखा तब उनके मन में भी इसके प्रति आकर्षण जागा होगा।

इस प्रकार सत्य पर आधारित स्वावलंबन की यह विद्या आशुफलदायिनी होने के कारण लोगों को आकर्षित करने लगी। भगवान के ये प्रथम धर्मदूत भिन्न-भिन्न मार्ग पर चारिका करते हुए लोगों को यह विद्या सिखाने लगे और लोग आकर्षित व लाभान्वित होने लगे। इस प्रकार विद्या का आरंभ इन साठ धर्मदूतों ने किया। लेकिन आगे चल कर अन्य अनेक पुण्यलाभी लोग इस रास्ते चल कर न केवल स्वयं लाभान्वित हुए बल्कि औरों को भी इस सही विद्या का प्रशिक्षण देने लगे। यूं भगवान की यह विद्या उत्तर भारत में शहर-शहर, गांव-गांव में फैलने लगी और लोगों का कल्याण करने लगी।

प्रारंभिक ६० धर्मदूतों में से ५ ब्राह्मण परिवार के थे और ५५ व्यापारी परिवार के। उनका व्यापारी समाज से संपर्क होने के कारण व्यापारियों में धर्म तेजी से फैला। व्यापारी अपने काम-धंधे के लिए दूर-दूर तक यात्रा करते थे। अतः जहां जाते वहां बुद्ध की शिक्षा का बखान करते। उनके माध्यम से बुद्ध की शिक्षा दूर-दूर तक फैलने लगी।

इसी प्रकार का एक समूह गंधारदेश की राजधानी तक्षशिला के राजा पुक्कुसाति के पास पहुँचा। जब उसने बुद्ध की शिक्षा के बारे में सुना और यह जाना कि बुद्ध इस समय राजगीर में विराज रहे हैं, तब वह यह सुन कर अत्यंत रोमांचित हो गया और भगवान से मिलने के लिए उत्सुक हो गया। अपनी पूर्व पारमी के कारण राजपाट छोड़ कर वह भगवान से मिलने और उनकी शिक्षा ग्रहण करने के लिए राजगीर की ओर निकल पड़ा। वह बहुत प्रजावत्सल था अतः उसे महल छोड़ कर जाते हुए देख, उसकी प्रजा क्षुब्ध हो उठी और उसके पीछे-पीछे चलने लगी। उसने बहुत रोका पर वह नहीं मानी। अंत में उसने दृढ़तापूर्वक कहा कि तुम मुझे अपना शासक मानते हो तो मैं यह लकीर खींचता हूं। इसके आगे एक कदम भी नहीं रखोगे। प्रजा निराश होकर लौट गयी। वह अकेला पैदल ही चल पड़ा। लंबी यात्रा पूरी करके जब राजगीर पहुँचा तब तक सायंकाल हो चुका था। नगर के दरवाजे बंद हो चुके थे। अतः बाहर किसी कुम्हार की एक धर्मशाला में जा टिका। संयोग से वहीं पर भगवान भी टिके हुए थे। अतः उनसे उसे वहीं शुद्ध धर्म की शिक्षा मिली और वह तत्काल अनागमी अवस्था पर पहुँच गया। भगवान ने कहा, सुबह होने पर नगर में जाकर किसी से चीवर मांग लाओ, तभी तुम्हें उपसंपदा मिलेगी। वह नगर में जा ही रहा था कि एक दुर्घटना का शिकार हो गया। किसी बैल के सींगों से मारा गया। इस प्रकार भिक्षु नहीं बन सका और उपसंपदा से वंचित रह गया।

यह एक उदाहरण मात्र है कि संबुद्ध की शिक्षा सुदूर गंधार देश और शाल (क्वेटा) तक जा पहुँची। जिन देशों में भी पहुँची, वहीं के लोगों के मन में उसके प्रति आकर्षण जागा। लोगों ने उसे स्वीकार किया और लाभान्वित हुए। इस प्रकार धर्मचक्र का प्रकाश उत्तर भारत में दूर-दूर तक फैला। हम भी इससे प्रेरणा पायें और अपना कल्याण साधें। इसी में सब का मंगल है, कल्याण है।

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

पूज्य गुरुदेव द्वारा संपन्न सार्वजनिक कार्यक्रमों की सूचना

ग्लोबल विपश्यना पगोडा में एक दिवसीय

विगत **६ मई** को **बुद्ध पूर्णिमा** के अवसर पर ग्लोबल विपश्यना पगोडा में एक दिवसीय महाशिविर का आयोजन हुआ जिसमें भारत के कोने-कोने से आये लगभग ३,००० साधकों ने धर्मलाभ लिया। इसके अतिरिक्त लगभग ४,५०० आगंतुक भी उनके ३ बजे के समापन प्रवचन में सम्मिलित हुए। उस दिन पगोडा पर आने वाले आगंतुकों की कुल संख्या १०,०३६ थी। पूज्य गुरुदेव की उपस्थिति, उनके प्रवचन और मैत्री से सभी लोग लाभान्वित हुए।

८ जुलाई को **धम्मचक्कपवत्तन दिवस** के उपलक्ष्य में आयोजित एक दिवसीय शिविर में ग्लोबल विपश्यना पगोडा में २,५१२ लोगों ने धर्मलाभ प्राप्त किया। आगंतुकों की कुल संख्या ६,११४ थी। इसके समापन पर ३ से ४ बजे तक पूज्य गुरुदेव ने घंटे भर हिंदी एवं अंग्रेजी में **धर्मचक्र-प्रवर्तन** के महत्त्व को समझाया और मंगल मैत्री से लोगों को अभिभूत किया।

भाभा अटॉमिक रिसर्च सेंटर में सार्वजनिक प्रवचन

गत ११ जून को अति संवेदनशील भाभा अटॉमिक रिसर्च सेंटर में सघन सुरक्षा-व्यवस्था के बीच केंद्र के अधिकारियों के लिए पूज्य गुरुदेव के प्रवचन का विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें देश के अन्य अटॉमिक केंद्रों के अधिकारी भी आमंत्रित थे। यहां वैज्ञानिकों द्वारा पूज्य गुरुदेव को सम्मानित किया गया और विशेषरूप से आमंत्रित अतिथियों के भोजन इत्यादि की व्यवस्था भी की गयी थी। गुरुदेव ने वैज्ञानिकों को विपश्यना की वैज्ञानिकता और उपयोगिता समझाई तथा उनके सारगर्भित प्रश्नों के उत्तर दिये, जिससे वे सभी बहुत प्रभावित हुए और धर्म सीखने के लिए उत्सुक भी। (इसकी रेकार्डिंग इंटरनेट पर उलब्ध है।)

मिनी आनापान शिविर

विगत ७ जुलाई को सभी को धर्म से लाभान्वित करने के लिए पूज्य गुरुदेव ने मिनी आनापान शिविर की विशेष रेकार्डिंग की। यह **मिनी आनापान** की रेकार्डिंग २० मिनट की हिंदी में है और १५ मिनट की अंग्रेजी में। इनमें १० वर्ष से अधिक आयु के सभी लोग भाग ले सकते हैं। यह विपश्यना का परिचयात्मक स्वरूप है। इसे सीखने वाले को विपश्यी साधक नहीं कहा जा सकता। परंतु आनापान का अपना लाभ है। यदि कोई नित्य-नियमित सुबह-शाम १०-१० मिनट तक इसका अभ्यास करता रहे तो लाभान्वित अवश्य होगा और इस छोटे लाभ को बड़े लाभ में बदलने के लिए साधना के दस-दिवसीय शिविर में आने की प्रेरणा भी प्राप्त होगी।

उपरोक्त रेकार्डिंग वेबसाइट पर उपलब्ध करा दी गयी है, जिसे कोई भी सुन कर अभ्यास कर सकता है। इसे **डाऊनलोड** कर सकते हैं और भविष्य में जब भी चाहें इसे सुन कर अभ्यास कर सकते हैं तथा **दूसरों को भी सुना कर** आनापान करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इस पर कोई प्रतिबंध या शुल्क नहीं है।

इसके अतिरिक्त नेट पर और भी कई ऑडियो-विडियो उपलब्ध कराये गये हैं, जिनकी सूची नीचे दी गयी **लिंक** खोलने पर बगल में दिखायी देगी। इनमें दस मिनट का **बच्चों के लिए** एक **आनापान अभ्यास-सत्र** (निर्देश) भी है।

नेट-लिंक खोलने के लिए URL (for Video & Audio links):--
http://www.vridhamma.org/Mamfa

'ग्लोबल विपश्यना पगोडा' में लघु आनापान शिविर

पूज्य गुरुदेव ने लाखों लोगों के हित-सुख को ध्यान में रखते हुए सब के लिए २० मिनट के मिनी आनापान शिविर लगाने की छूट दी है। **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** में प्रतिदिन प्रातः ११:०० से ११:२० बजे तथा सायं ४:०० से ४:२० बजे, इन शिविरों का आयोजन आरंभ हो चुका है। १० वर्ष से अधिक आयु के सभी लोग इनमें भाग ले सकते हैं। पूरे २० मिनट हॉल में बैठना अनिवार्य है।

इंटरनेट पर हिंदी वेबसाइट व हिंदी पत्रिका, मोबाइल पर भी

प्रसन्नता का विषय है कि **इंटरनेट पर** विपश्यना-संबंधी सभी प्रकार की जानकारी निम्न वेबसाइट पर हिंदी में भी उपलब्ध है और इसी प्रकार **"स्मार्ट"** फोन रखने वाले, सारी जानकारियां अपने मोबाइल पर भी देख सकते हैं। क्रमशः इस प्रकार देखें– websites: www.hindi.dhamma.org; www.mobile.dhamma.org; for *Hindi & other language News Letters*:-- http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१-२. श्री गौतम एवं श्रीमती प्रज्ञा गोस्वामी, कच्छ
३. डॉ. संग्राम जोंधले, नांदेड

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१-२. श्री अजीत एवं श्रीमती अमीता पारेख, मुंबई
३. कु. कंचन जेसलपारा, अहमदाबाद
४. श्री सूर्यभान गेडाम, मुंबई
५. श्रीमती मधु मेहता, मुंबई
६. श्रीमती रीना घोष, ठाणे
७. श्री मौजीलाल संखवार, कानपुर
8. Mr. Michael Colyvan, Australia
9. Ms. Abigail Bliss, USA
10. Mrs. Erika Kaschlun, Portugal
11. Mr Daniel Gomez, Canada

बालशिविर शिक्षक

१. श्री सुमित तनेजा, बंगलूरू
२. श्रीमती गीता बोगम, पुणे
३-४. श्री अंशुमन एवं श्रीमती प्रियंका हजारिका, मुंबई
५. श्री रितेश कुंटे, मुंबई
६. श्रीमती पल्लवी कदम, मुंबई
७. श्रीमती करुणा निकम, मुंबई
८. सिस्टर बर्नाबास, पांडिचेरी
९. श्रीमती अरुणमोझी एस. मदुराई
१०. श्रीमती एम. सुब्बुलक्ष्मी, तूतीकोरिन
११. श्रीमती पार्वथी मुथुस्वामी, इरोड
१२. श्रीमती माला देवीदास, चेन्नई
१३. श्रीमती अनीता गुप्ता, जयपुर
१४. श्री पियुष बलाई, शिमोगा
१५. श्री विमल सूचक, कच्छ
16. Mrs. Mara Gutierrez, Spain

जन्मभूमि और धर्मभूमि म्यंमा में कौटुंबिक समारोह

पूज्य गुरुदेव के पितामह के म्यंमा में बसने के १३५ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में **गोयन्का परिवार** की ओर से लगभग २२ दिसंबर को एक समारोह आयोजित किया जा रहा है। इसमें सम्मिलित होने के लिए पूज्य गुरुदेव एवं माताजी भी अपनी जन्मभूमि और धर्मभूमि म्यंमा जा रहे हैं। इस बहाने वहां के धर्मपुत्रों-धर्मपुत्रिओं, अनेक पूर्व परिचितों तथा मित्रों से भेंट होगी, श्वेडगोन पगोडा में सामूहिक साधना होगी और पूज्य गुरुदेव के कुछ धर्म-प्रवचन भी होंगे।

शरद पूर्णिमा के उपलक्ष्य में पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

२८ अक्टूबर, २०१२, **रविवार**, **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में। कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर में आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क** : **मो.** 09892855692, 09892855945, **फोन नं.:** 022-28451170, 33747543, 33747544, **(फोन बुकिंग :** प्रातः **११** से सायं **५** तक, प्रतिदिन)
ईमेल Registration: oneday@globalpagoda.org;
Online Registration: www.vridhamma.org

दोहे धर्म के

आओ मानव मानवी! चलें धरम के पंथ।
इस पथ चलते सत्पुरुष, इस पथ चलते संत॥

धर्म-पंथ ही शांति-पथ, धर्म-पंथ सुख-पंथ।
जिसने पाया धर्म-पथ, मंगल मिला अनंत॥

कदम कदम चलते रहें, शुद्ध धरम के पंथ।
कदम कदम बढ़ते रहें, करें दुखों का अंत॥

शोक-तप्त व्याकुल रहे, मूरख मूढ़ अजान।
लोक चक्र उलझे नहीं, पंडित धीर सुजान॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

फिर स्यूं जागै जगत मँह, विपस्सना री जोत।
सब रो मंगळ ही सधै, कुळ छांटै ना गोत॥

फिर स्यूं जागै धरम री, बाणी मंगळ मूळ।
जन जन रो हित सुख सधै, मिटै दुक्ख भव सूळ॥

धरती पर बहती रवै, सुद्ध धरम री धार।
जन जन रो होवै भलो, जन जन रो उद्धार॥

सुद्ध धरम फिर जगत मँह, पूज्य प्रतिस्टित होय।
जन जन रो होवै भलो, जन जन मंगळ होय॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2556, श्रावण पूर्णिमा, 2 अगस्त, 2012**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712, 243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org